2.सत्य की महिमा

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

१.“सत्य'' क्या होता है? उसका रूप कैसे होता है?

उत्तर : सत्य ! बहुत भोला-भाला, बहुत ही सीधा-सादा ! जो कुछ भी अपनी आँखों से देखा, बिना नमक-मिर्च लगाए बोल दिया- यही तो सत्य है।कितना सरल ! सत्य दृष्टि का प्रतिबिंब है, ज्ञान की प्रतिलिपि है, आत्मा की वाणी है।

२.झूठ का सहारा लेते हैं तो क्या-क्या सहना पड़ता है?

उत्तर : झूठ का सहारा लेते हैं तो मुँह काला करना पड़ता है और अपमानित होना पड़ता है।

३.शास्त्र में सत्य बोलने का तरीका कैसे समझाया गया है?

उत्तर : शास्त्र में सत्य बोलने का तरीका इस प्रकार समझाया गया है- “सत्यं ब्रूयात, प्रियं ब्रूयात, न ब्रूयात सत्यमप्रियम” अर्थात, “सच बोलो जो दूसरों को प्रिय लगे, अप्रिय सत्य मत बोलो।“

४.“संसार के महान व्यक्तियों ने सत्य का सहारा लिया है”-सोदाहरण समझाइए।

उत्तर : संसार में जितने महान व्यक्ति हुए, सबने सत्य का सहारा लिया है। सत्य का पालन किया है। राजा हरिश्चन्द्र की सत्यनिष्ठा विश्वविख्यात है। उन्हें सत्य के मार्ग पर चलते अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, लेकिन उनकी कीर्ति आज भी सूरज की रोशनी से कम प्रकाशमान नहीं है। राजा दशरथ ने सत्यवचन निभाने के लिए अपने प्राण त्याग दिए। महात्मा गाँधी ने सत्य की शक्ति से ही विदेशी शासन को झकझोर दिया।

५.महात्मा गाँधी का सत्य की शक्ति के बारे में क्या कथन है?

उत्तर : महात्मा गाँधी का सत्य की शक्ति के बारे में कथन इस प्रकार है- “सत्य एक विशाल वृक्ष है। उसका जितना आदर किया जाता है, उतने ही फल उसमें लगते हैं। उनका अंत नहीं होता।“

६.झूठ बोलनेवालों की हालत कैसी होती है?

उत्तर : झूठ बोलनेवालों से लोगों का विश्वास उठ जाता है। उनकी उन्नति के द्वार बंद हो जाते हैं।

७.हर स्थिति में सत्य बोलने का अभ्यास क्यों करना चाहिए?

उत्तर : सत्य वह चिनगारी है जिससे असत्य पल भर में भस्म हो जाता है। अतः हमें हर स्थिति में सत्य बोलने का अभ्यास करना चाहिए।